(E - 118)

यह स्वर्णपुरी अति पावन है

(राग–जय केवलभानु; छंद तोटक)

यह स्वर्णपुरी अति पावन है, मंगल मंगल मंगलकर है।
यह मुक्तिमार्ग प्रकाशक है, स्वानुभूतितीर्थ अति मंगल है॥

स्वर्णिम आभा है स्वर्णपुरीकी, स्वर्णिम है इतिहास बना।
गुरुवरकी अध्यातम वाणीसे, निर्मित यह तीरथधाम महा॥

सातिशय जिनवरमंदिर है, दिव्यमूरति सीमंधरजिनकी।
जिनके दर्शनकर जगप्राणी, आतमशांति सुख पाते हैं॥

विदेही चितार है समवसरण, जहाँ कुंदप्रभुजी पधारे हैं।
उन्नत मानस्तंभ दिव्य महा, विदेहीनाथ बिराजे हैं॥

परमागम मंदिर अद्भूत है प्रभु महावीरकी मूरति है।
कुंदकुंद चरण अभिराम बने, पंच परमागम श्रुतमंदिरमें॥

पंचमेरु नंदीश्वरधाम बना, भावि जिनवरजी बिराजित है।
आदिनाथ प्रभु अरु जिनवरवृंद, रत्नजड़ित वचनामृत हैं॥

स्वाध्यायमंदिर बना अति सुंदर, जहाँ कहानगुरुने वास किया।
पैंतालीस वर्षो तक जहाँ गुरुने, आतमका ही ध्यान किया॥

अनुभवभीनी वाणी बरसी, मानो अमृत धारा बरसी।
गुरु–वचनामृतसे सारे जगमें, फैली आतमकी हरियाली।।

प्रवचनमंडप सुविशाल अहा, गुरु प्रभावनाका स्मारक है।
पौराणिक चित्रावलि अंकित, पंच परमागम हरिगीत रचे।।

जंबूद्वीप रचना न्यारी है, शाश्वत जिन प्रतिमा प्यारी है।
गजदंत, कुलाचल, मेरुगिरि, विजयार्ध, वक्षार सुसुंदर है।।

विदेही सीमंधर युगमंधर, बाहु-सुबाहु जिन सोहे हैं।
भरतैरावतके शाश्वत जिन, सुवर्णपुरीमें पधारे हैं।।

दिव्यमूर्ति बाहुबली जिनकी, अति सुंदर अचरजकारी है।
गुरुकृपासे मेघामृत बरसे, गाजत जय जय जयकारी है।।

प्रशममूर्ति मात भगवती, स्वानुभूतिविभूषित रत्न अहो।
ज्ञान वैराग्य भक्तिका संगम है, स्मृतिज्ञान अलौकिक मंगल है।।

जयवंत रहो जयवंत रहो स्वानुभूतितीर्थ जयवंत रहो।
तारणहारे गुरुदेवका यह स्वानुभूतितीर्थ जयवंत रहो।।